हिन्दी

(स्पर्श)(पाठ 7)(गणेशशंकर विद्यार्थी – धर्म की आड़)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
चलते–पुरजे लोग धर्म के नाम पर क्या–क्या करते हैं ?
उत्तर 1:
आज के इस समाज में कुछ चलते–पुरजे लोग अपने नेतृत्व और बड़प्पन को कायम रखने के लिए समाज के कुछ अनपढ़ व मूर्ख लोगों के उत्साह व शक्ति का धर्म और ईमान के नाम पर गलत उपयोग कर रहे हैं ।

प्रश्न 2:
चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं ?
उत्तर 2:
इस देश के कुछ चंद चालाक लोगों ने आम आदमी के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठा दी है कि अपने धर्म व ईमान की रक्षा के लिए अपने प्राण तक दे देने के लिए तैयार रहना चाहिए। और जो वे बोल रहे हैं वही धर्म है।

प्रश्न 3:
आने वाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा ?
उत्तर 3:
आने वाला समय ऐसे धर्म को नहीं टिकने देगा जो आपस में एक–दूसरे को लड़ाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि करने में लगा रहे । यहाँ पर भिन्न धर्मों के टकराने के लिए कोई स्थान नहीं होगा ।दूसरे धर्म की निंदा करना देशद्रोह माना जाएगा ।

प्रश्न 4:
कौन–सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा? ?
उत्तर 4
किसी के धर्म की निंदा करना या उनके धार्मिक कार्यों में टाँग अड़ाना और एक दूसरे को धर्म के नाम पर लड़ाना देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा ।

प्रश्न 5:
पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है ?
उत्तर 5:
पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों गरीब मजदूरों की कमाई ही पड़ते जाते हैं और उसी के बल से वे हमेशा ऐसा करते हैं कि गरीबों सदा गरीब ही रखा जाए इस भयंकर अवस्था के कारण, साम्यवाद, बोल्शेविज्म आदि का जन्म हुआ।

प्रश्न 6:
कौन–से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं ?
उत्तर 6:
ऐसे लोग उन धार्मिक लोगों से ज्यादा अच्छे जो दिन रात अपने अपने आराध्य की पूजा करतें हैं और एक –दूसरे को लड़ाते हैं क्योंकि ये लोग भले ही ईश्वर का न माने मगर किसी के सुख–दुख में उसके साथ होते हैं किसी को परेशान नहीं करते । आपस में एक'–दूसरे को नहीं लड़वाते ।

खंड – ख

प्रश्न 1:
धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता है? ?
उत्तर 1:
आज देश में धर्म और ईमान के नाम पर होने वाले व्यापार को रोकने के लिए सभी को धर्म से ऊपर उठकर देश के बारे में सोचना होगा और इन लोगों को कड़ा जवाब देना होगा कि अब हम लोग आप लोगों की बातों में आने वाले नहीं हैं हम लोगों को गुमराह करके चलने वाला आपका आपका व्यापार अब बंद होगा ।

प्रश्न 2:
'बुद्धि पर मार' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं ?
उत्तर 2:
बुद्धि पर मार के संबंध में लेखक का यह मानना है कि कुछ अपने आप को मसीहा समझने वाले लोग भोली–भाली जनता को धर्म के नाम पर डराकर उनकी बुद्धि पर कब्जा करके मनमाने ढंग से अपना व्यापार बढ़ाते हैं और जनता उनकी बातों में आकर उनके अनुसार कार्य करने लगती है । और बौद्धिक तौर पर उनकी गुलाम बन जाती है ।

प्रश्न 3:
लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए ?
उत्तर 3:
लेखक के अनुसार धर्म की उपासना के मार्ग में कोई भी रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो। वह, किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने या कुचलने का साधन न बने।

प्रश्न 4:
महात्मा गांधी के धर्म–संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर 4:
महात्मा गांधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक पग भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परंतु उनकी बात ले उड़ने से पहले, प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भली–भाँति समझ ले कि महात्मा जी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है ? धर्म से महात्मा जी का मतलब धर्म उँचे और उदार तत्त्वों का हुआ करता है। उनके मानने में किसे एतराज हो सकता है।

प्रश्न 5:
सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है ।

उत्तर 5:
सबके कल्याण की दृष्टि से आपका पूजा–पाठ नहीं देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी। आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे तो नमाज और रोजे , पूजा आपको देश के अन्य लोगों की आजादी को रौंदने और देश–भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आजाद नहीं छोड़ेंगे ।

खंड – ग

आशय स्पष्ट कीजिए

1.
उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता–बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है।

उत्तर 1:
लेखक के अनुसार साधारण और अपनी सोच न रखने वाले व्यक्ति को अच्छे –बुरे की पहचान ही नहीं होती वी तो अपने मार्गदर्शक को ही अपना सबकुछ मानता हे उसके कहे अनुसार ही कार्य करता है , उस पर जरा सी ऑच नहीं आने देता है चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए । और दिखाए गए रास्ते पर बिना सोचे–समझे चलने लता है ।

2.
यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना–भिड़ाना।

उत्तर 2:
समाज में अपने आप को धर्म का ठेकेदार मानने वाले लोग साधारण जनता को ईश्वर के नाम पर डराते है फिर अपने आप को ही ईश्वर का प्रतिनिधि बताते हुए अपने अनुसार उनसे कर्म करवाते हैं आपस में एक दूसरे को लड़वाते हैं और भोले–भाले लोग उनकी इन चालों को न समझते हुए अपना और समाज बड़ा नुकसान कर बैठते हैं ।

3.
अब तो, आपका पूजा–पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी।

उत्तर 3:
लेखक के अनुसार चालाक लोगों की चालाकी अब ज्यादा दिन तक नहीं चलेगी धर्म के नाम पर अब लोगों को गुमराह नहीं किया जा सकेगा अब तो यह देखा जाएगा कि आप किनते ईश्वर भक्त हैं आपका समाज के प्रति आचरण कैसा है और वास्तव में आप समाज का कितना भला चाहते हैं ।

4.
तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो!

उत्तर 4:
लेखक के अनुसार अब तो ईश्वर भी लोगों की चालाकी को समझते हुए उनसे कहता है कि तुम भले ही मुझे न मानों पर मेरे नाम पर गंदा व्यापार मत करो मैंने तुम्हें मनुष्य बनाकर धरती पर भेजा है । राक्षस बनना छोड़ों आदमी बनो लोगों के सुख'–दुख समझो और उनके कल्याण का माध्यम बनो ।